इकाई 9 विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन और प्रस्तुति

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य

9.1 प्रस्तावना

9.2 विज्ञान फीचर से अभिप्राय

9.3 विज्ञान फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

- 9.3.1 विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित
- 9.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित
- 9.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

9.4 पर्यावरण से संबंधित फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

- 9.4.1 पर्यावरण प्रदूषण
- 9.4.2 पारिस्थितिकी संतुलन
- 9.4.3 पर्यावरण जागरूकता संबंधी फीचर

9.5 स्वास्थ्य से संबंधित फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

9.6 भाषा–शैली

9.7 सारांश

9.8 बोध प्रश्नों/अभ्याओं के उत्तर

9.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- विज्ञान फीचर का अर्थ और महत्त्व समझ सकेंगी/सकेंगे;
- पर्यावरण फीचर की जरूरत और उसके लेखन के तरीके पर टिप्पणी कर सकेंगी/सकेंगे;
- वैज्ञानिक उपलब्धियों का पर्यावरण पर प्रभाव और प्रदूषण की बढ़ती समस्या पर प्रकाश डाल सकेंगी/सकेंगे;
- चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में फीचर लेखन की संभावनाओं पर प्रकाश डाल सकेंगी/सकेंगे;
- विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से जुड़े विषयों का चयन और उन पर लेखन का तरीका जान सकेंगी/सकेंगे और
- इन विषयों पर फीचर लेखन की भाषा और शैली सीख सकेंगी/सकेंगे।

9.1 प्रस्तावना

आज विज्ञान का युग है। समाज का शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र है जिसमें विज्ञान ने अपनी पहुंच नहीं बनाई है। भौतिकी, रसायन, जीव, वनस्पति और चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में तो रोज नए–नए प्रयोग हो ही रहे हैं। दैनिक जीवन से जुड़ी सुविधाओं, भूगर्भ, अंतरिक्ष, रक्षा, पर्यावरण, परिवहन, संचार आदि क्षेत्रों में भी लगातार नए शोध हो रहे हैं। इस तरह विज्ञान का दायरा काफी व्यापक हुआ है। इसके अध्ययन के लिए कई नयी शाखा–प्रशाखाओं का विकास हुआ है।

मगर विज्ञान के विकास के साथ मानव जीवन में जितनी सुविधाएं और सहूलियतें बढ़ी हैं, और एक दूसरे के साथ संपर्क और विचारों के आदान–प्रदान में आसानी हुई है वहीं इसके कई कुछ प्रतिकूल प्रभाव भी चिंता बन कर उभरे हैं। वाहनों, औद्योगिक इकाइयों और घरेलू उपकरणों से निकलने वाली रासायनिक गैसों ने हमारे आसपास का वातावरण प्रदूषित किया है। इससे दुनिया का तापमान बढ़ा है। मौसम का मिजाज गड़बड़ हुआ है। सूखा या अतिवर्षा जैसी समस्याएं पैदा होने से फसलों और वनस्पतियों का अस्तित्व खतरे में पड़ा है। कई पौधों और वन्य जीवों की प्रजातियां या तो नष्ट हो गयी हैं या दुर्लभ बन कर रह गई हैं। इससे पारिस्थितिकी संतुलन तेजी से बिगड़ा है। प्रदूषित हवा के कारण फेफड़े, त्वचा, सांस संबंधी अनेक नयी बीमारियां पैदा हुई हैं। रासायनिक कचरे के खेतों में पहुंचने, अनाज और सब्जियों में रासायनिक तत्त्वों के घुल–मिल जाने के कारण दिमागी बुखार और कैंसर जैसी जानलेवा बीमारियों के खतरे बढ़े हैं। आए दिन नयी बीमारियों के लक्षण उभरते देखे जाते हैं। इसलिए विज्ञान के विकास के साथ–साथ पर्यावरण और अपने आसपास के वातावरण को सुरक्षित बनाए रखने की चुनौती भी हमारे सामने उपस्थित हुई है।

विज्ञान और प्रकृति के बिगड़ते रिश्तों के मानव जीवन पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों से निपटने के लिए चिकित्सा विज्ञान निरंतर प्रयास कर रहा है। असाध्य और महामारी फैलाने वाले रोगों को जड़ से समाप्त करने के लिए टीके और दवाइयों की खोज हो रही है। कई खोजें की जा चुकी हैं। शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में इलाज की सूक्ष्मतर पद्धतियों का विकास हुआ है। इस सारे वैज्ञानिक विकास और उपलब्धियों को नजरअंदाज करना संचार माध्यमों के लिए आसान नहीं रह गया है। हर पत्र–पत्रिका यहां तक कि इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम भी विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से जुड़ी समस्याओं, खोजों और उपलब्धियों पर अपने विशेष फीचर पृष्ठ और कार्यक्रम प्रकाशित–प्रसारित करने लगे हैं। इन क्षेत्रों पर आधारित स्वतंत्र पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी हैं। कंप्यूटर, ऑटोमोबाइल, उद्योग, संचार, भूगोल (जियोग्राफी), भू–भौतिकी (जियोफिजिक्स)और जैव–भौतिकी (बायोफिजिक्स), जैव–तकनीक (बायो–टेक्नोलॉजी) आदि पर पत्रिकाओं का प्रकाशन काफी व्यापक ढंग से हो रहा है। विज्ञान और तकनीक के मेल से भी कई नये क्षेत्र खुले हैं।

ऐसे में विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा के क्षेत्र से जुड़े फीचर लेखन की संभावनाएं तेजी से विकसित हुई हैं। इस पाठ में हम इन क्षेत्रों के विषयों के चयन और उन पर लेखन के तरीके के बारे में अलग–अलग और विस्तार से चर्चा करेंगे।

9.2 विज्ञान फीचर से अभिप्राय

जैसा कि आप जानते हैं, पिछले कुछ दशकों में विज्ञान के क्षेत्र में तेजी से विकास और विस्तार हुआ है। आमतौर पर माना जाता है कि तकनीकी और मशीनी विकास ही मुख्य वैज्ञानिक उपलब्धियां हैं लेकिन यह एकांगी सोच है। यह ठीक है कि विज्ञान ने समाज के हर क्षेत्र में विकास के नए अवसर और स्रोत उपलब्ध कराए हैं और आर्थिक विकास में तो इसका महत्वपूर्ण योगदान है ही। आज घरेलू उपयोग के अनेक ऐसे उपकरणों का आविष्कार हो चुका है जिनसे दिन भर व्यस्त रहने वालों के लिए काफी सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। रसोई घर से लेकर दफ्तर और परिवहन आदि की भी अनेक सुविधाएं उपलब्ध हैं। आरामदेह गाड़ियों के नए–नए मॉडल बाजार में आ रहे हैं। सड़क, हवाई और समुद्री यात्राओं–माल ढुलाई में सुविधाजनक विस्तार हुआ है। घर बैठे दुनिया भर की जानकारियां प्राप्त करने और भेजने की सुविधाएं उपलब्ध हुई हैं। उपग्रहों के जरिए सूचना तकनीक के क्षेत्र में तेजी से विकास हो रहे हैं। समुद्र तल और अंतरिक्ष में विकास के स्रोतों की तलाश जारी है। अंतरिक्ष में दूसरे ग्रहों की स्थितियों, उनके प्राकृतिक परिवेश और वहां जीवन संभावना की जानकारी हासिल करने के प्रयास चल रहे हैं।

कंप्यूटर और मोबाइल फोनों ने संचार के क्षेत्र में क्रांति ला दी है। शिक्षा के क्षेत्र में संचार तकनीक के जरिए नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। कृषि और औद्योगिक उत्पादन बढ़ाने के लिए नई–नई मशीनों के आविष्कार हो रहे हैं। व्यापार और बैंकिंग के क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक मशीनों ने काफी सहूलियत ला दी है। बाजारों में खरीद–फरोख्त की पारंपरिक पद्धतियों में बदलाव आया है। इंटरनेट के जरिए आदेश लिए और दिए जाने लगे हैं। व्यावसायिक मोलभाव किए जाने लगे हैं और इसी के जरिए भुगतान होने लगे हैं। राजनायिक के मामले में एक देश को दूसरे देश से संपर्क बनाए रखने में सहूलियत हुई है। अब आदमी की जगह रोबोट से भी काम लिया जाने लगा है। मशीनों में इच्छित वस्तु का खाका भर देने भर से वह उसका उत्पादन करने लगती है। इस तरह मानव श्रम की काफी बचत हुई है। इन तमाम आविष्कारों, उपलब्धियों के बारे में जानकारी उपलब्ध करना तो संचार माध्यमों का उद्देश्य होता ही है, इसके अलावा सामाजिक विकास में विज्ञान की भूमिका को रेखांकित करना भी उनका मकसद है।

समाज के ग्रामीण और पिछड़े इलाकों में काफी बड़ी तादाद ऐसे लोगों की है जो आज भी आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों से वंचित हैं और प्राचीन मान्यताओं, झाड़–फूंक, टोने–टोटकों, गंडा–तावीज, परंपरागत पद्धतियों पर विश्वास करते हैं। आज भी बच्चों की बलि, महिलाओं को चुड़ैल घोषित कर जान से मार डालने, सती परीक्षा के नाम पर खौलते तेल में उनका हाथ डलवाने, कथित भूत–प्रेत या दुष्ट आत्माओं के चक्कर से निजात पाने की कोशिश में ठग–तांत्रिकों के शोषण का शिकार होने की घटनाएं अक्सर सामने आती रहती हैं। विज्ञान इन भ्रमों और अंधविश्वासों को तोड़ कर लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने, चीजों को तर्कों पर जांचने–परखने की प्रवृत्ति विकसित करने का भी काम करता है। इसलिए संचार माध्यम सामाजिक उत्थान में विज्ञान की भूमिका को रेखांकित करने का भी दायित्व निभाते हैं।

पत्र–पत्रिकाओं के लिए विज्ञान से जुड़े विषयों पर फीचर लिखते समय इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि हमारा ध्यान सिर्फ वैज्ञानिक शोधों और उपलब्धियों पर केंद्रित होकर न रह जाए। विज्ञान फीचर लेखन का मकसद उन तथ्यों को भी

उजागर करना होना चाहिए जिनसे लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता हो। आमतौर पर लोग वैज्ञानिक उपलब्धियों का इस्तेमाल अपने जीवन में तो करते हैं, लेकिन बहुत सारे मामलों में तर्कों का सहारा लेने की बजाय रूढ़ मान्यताओं पर भरोसा कर लेते हैं। दूसरे, जरूरी नहीं कि हर वैज्ञानिक उपलब्धि का सामाजिक और मानवीय दृष्टि से सही इस्तेमाल ही होता हो। उसके मानव जीवन पर कुछ दुष्प्रभाव भी हो सकते हैं।

देखा गया है कि औद्योगिक इकाइयां प्रदूषण मानकों का पालन करने के मामले में लापरवाही बरतती हैं या जानबूझ कर उन्हें नजरअंदाज करती हैं। जिन इकाइयों से जहरीली गैसें और हानिकारक पानी निकलता है उनके लिए जल शोधक संयंत्र लगाना आवश्यक होता है ताकि नालों के जरिए जब यह पानी रिहायशी इलाकों से होकर गुजरे तो उससे निकलने वाली हानिकारक गैसें लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव न डालें। लेकिन अनेक औद्योगिक इकाइयां ऐसा नहीं करतीं। इसी प्रकार पिछले दिनों कोक और पेपसी जैसे शीतल पेयों में कीटनाशक मिले होने के तथ्य उजागर हुए तो देश के विभिन्न हिस्सों में बड़े आंदोलन शुरू हुए। जांच के बाद यह भी पाया गया कि इन्हें बनाने वाली औद्योगिक इकाइयां जिन इलाकों में लगी हैं वहां भू–जल का इस कदर दोहन होता है कि जल–स्तर काफी नीचे चला गया है। इन इकाइयों से निकलने वाले गंदे पानी के असपास के इलाकों में फैलते रहने से वहां की खेती योग्य जमीन लगातार बंजर होती ही है। इन दुष्प्रभावों का विवेचन भी विज्ञान फीचर का मकसद होना चाहिए।

9.3 विज्ञान फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

जैसा कि ऊपर हमने कहा हैं, विज्ञान का क्षेत्र पिछले कुछ दशकों में काफी व्यापक हुआ है। समाज का शायद ही कोई ऐसा पहलू है जिसमें विज्ञान की पहुंच संभव नहीं हुई है। इसलिए आज विज्ञान से संबंधित फीचर लिखने के लिए यह जरूरी हो गया है कि क्षेत्र विशेष का चुनाव पहले से कर लिया जाए। विज्ञान में रुचि रखने मात्र से विज्ञान पर फीचर लिखना संभव नहीं है। जब तक क्षेत्र विशेष में रुचि न हो, उसका गहराई से अध्ययन न हो, उसके बारे में नयी से नयी जानकारी न हो, तब तक उसके बारे में फीचर लेखन गंभीर नहीं हो पाएगा। जरूरी नहीं कि भौतिकी की पढ़ाई कर लेने या उसके कुछ सिद्धांतों के बारे में जान लेने मात्र से कोई व्यक्ति इस योग्य हो जाए कि वह गाड़ियों (ऑटोमोबाइल) के तकनीकी पक्षों की बारीकी से पड़ताल कर सके। इसी तरह जरूरी नहीं कि जीव विज्ञान की पढ़ाई कर लेने मात्र से व्यक्ति क्लोनिंग या वृंत कोशिका (स्टेम सेल) को लेकर किए जा रहे अध्ययन के बारे में सूक्ष्मता से विश्लेषण कर सके। इसलिए विज्ञान फीचर लिखते समय विषय की गहराई से जानकारी होना पहली शर्त है। विज्ञान के विविध क्षेत्रों में से उसी क्षेत्र का चुनाव किया जाना चाहिए जिसमें आपकी जानकारी अधिक हो या जिसके बारे में सामग्री जुटा कर अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने की क्षमता हो। विज्ञान फीचर मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों से संबंधित होते हैं–

1) विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित

2) विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित और

3) वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

9.3.1 विज्ञान के विविध क्षेत्रों से संबंधित

इस प्रकार का फीचर लेखन मुख्य रूप से वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के बारे में किया जाता है। आज विज्ञान ने समाज के हर क्षेत्र में अपनी पहुंच बनाई है चाहे उद्योग जगत हो, कृषि, शिक्षा, परिवहन, अंतरिक्ष अनुसंधान का क्षेत्र हो या भूगर्भ अध्ययन या सूचना क्रांति का घरेलू कार्यों में काम आने वाले उपकरणों के निर्माण और उन्हें आसान और सुविधाजनक बनाने के लिए निरंतर प्रयास चल रहे हैं। हर कंपनी अपने उत्पादों में रोज नई–नई सुविधाएं और दूसरी कंपनी के उत्पादों से बेहतर बनाने की होड़ में लगी है। दैनिक उपयोग की हर वस्तु को आरामदेह, आसान और संचालित बनाने के लिए निरंतर शोध और प्रयास हो रहे हैं। विज्ञान फीचर का एक यह भी क्षेत्र हो सकता है कि पहले से आविष्कृत वस्तुओं में सुधार और उनकी क्षमता बढ़ाने की दिशा में जो प्रयास चल रहे हैं उनकी जानकारी और विश्लेषण उपलब्ध कराया जाए।

इसके अलावा विज्ञान फीचर का एक प्रमुख उद्देश्य यह तो होता ही है कि उसके जरिए लोगों को नये वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई जाए। इनमें किसी नए उपकरण की खोज, नए क्षेत्र में चल रहे अनुसंधान या किसी समस्या को सुलझाने की दिशा में हुई वैज्ञानिक खोजों की जानकारी दी जा सकती है। अगर एक नई तरह की गाड़ी बाजार में आने वाली है, कंप्यूटरों में नई सुविधा उपलब्ध कराई गई है, कोई नया सॉफ्टवेयर विकसित किया गया है या कृषि या शिक्षा के क्षेत्र में कोई नया तकनीकी प्रयोग हो रहा है तो उसकी जानकारी लोगों तक पहुँचना जरूरी है। अमेरिकी अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी नासा और दूसरे देशों के अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र लगातार अंतरिक्ष के अध्ययन में लगे हुए हैं। दूसरे ग्रहों की पर्यावरणिक स्थितियों और वहां पर जीवन की खोज के लिए निरंतर अनुसंधान चल रहे हैं। एक कक्षा में उपग्रह स्थापित कर दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी हासिल करने के प्रयास हो रहे हैं। उपग्रहों से दूसरे ग्रहों के बारे में लगातार जानकारियां हासिल की जा रही हैं। इसी तरह परमाणु ऊर्जा, भूगर्भ भौतिकी, जैव तकनीक और जीवनोपयोगी पदार्थो को लेकर अनुसंधान हो रहे हैं। इन सबकी रोचक जानकारी उपलब्ध कराना विज्ञान का विषय हो सकता है। एक उदाहरण देखें–

''टर्बोचार्जर एक तरह के फोर्स्ड इंडक्शन सिस्टम हैं, जो इंजन में आने वाली हवा को कंप्रेस करते हैं। हवा को कंप्रेस करने का यह फायदा होता है कि इससे सिलिंडर में ज्यादा हवा जा पाती है, जिससे आपकी गाड़ी दूर तक चलती है। कुल मिलाकर यह कहना वाजिब होगा कि टर्बोचार्ज्ड इंजन आम इंजन के मुकाबले ज्यादा पॉवर पैदा करता है। इससे इंजन की वजन सहने की क्षमता में काफी सुधार होता है। इसके लिए टर्बोचार्जर से निकलने वाली हवा के जरिए टर्बाइन को घुमाते हैं। जिससे एयरपंप घूमता है। टर्बोचार्जर की टर्बाइन एक मिनट में एक लाख चक्कर लगाती है। ज्यादातर कारों के इंजनों के मुकाबले यह तीस गुना ज्यादा तेज होती है।''

(क्या है टर्बो, दैनिक जागरण, 29 जून 2005)

विज्ञान के विविध क्षेत्रों से विषयों का चुनाव करते समय यह तय कर लेना जरूरी होता है कि आप किस पर लिखना चाहते हैं। विज्ञान फीचर के लिए विषयों का चुनाव प्रायः निम्नलिखित क्षेत्रों से किया जा सकता है–

भौतिकी	किसी मशीन उपकरण रक्षा सामग्री आदि की जानकारी
रसायन	जीवनोपयोगी, विकास संबंधी, औद्योगिक उपयोग के रसायनों और ऊर्जा साधनों से संबंधित जानकारी।
जीव विज्ञान	जीव प्रजातियों की खोज या उनके संरक्षण या जीव इंजीनियरी के लिए चल रहे प्रयासों की जानकारी
वनस्पति विज्ञान	वानस्पतिक प्रजातियों, सब्जियों, फलों, अनाज आदि की नई प्रजातियों को लेकर हुए अनुसंधानों या वनस्पतियों की लुप्त होती प्रजातियों के बारे में।
भूगर्भ	पृथ्वी के भीतर पाए जाने वाले तत्वों ऊर्जा स्रोतों, भूकंप, ज्वालामुखी, पर्यावरण आदि को लेकर हुए नए शोधों के बारे में
अंतरिक्ष	अंतरिक्ष के दूसरे ग्रहों के बारे में जानकारी जुटाने या उपग्रहों की स्थापना आदि को लेकर हो रहे प्रयास
सूचना तकनीक	संचार माध्यमों में नई तकनीकों को लेकर हुए शोध और अनुसंधान
परिवहन व्यवस्था	नई गाड़ियों और परिवहन व्यवस्था को लेकर हो रहे नए वैज्ञानिक प्रयोग
कृषि	खेती के काम आने वाले नए उपकरणों, खाद, कीटनाशकों आदि के बारे में शोध और विकास की जानकारी
शिक्षा	शिक्षा के क्षेत्र में नए वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोग, जैसे एडुसेट

9.3.2 विज्ञान की सामाजिक उपयोगिता से संबंधित

इस प्रकार के फीचर में वैज्ञानिक उपलब्धियों का विश्लेषण सामाजिक और मानवीय हितों को ध्यान में रख कर किया जाता है। इस बात से तो लगभग सभी अवगत हो चुके हैं कि कल–कारखानों की संख्या बढ़ने से उनसे निकलने वाली कार्बन डाइ ऑक्साइड और दूसरी जहरीली गैसों से पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है। वैश्विक तापमान बढ़ने और मौसम का मिजाज गड़बड़ाने से अतिवर्षा या अवर्षा जैसी समस्याएं उत्पन्न हो गई हैं। खेती योग्य जमीन बंजर हो रही है। पर्यावरणिक संतुलन गड़बड़ा रहा है। इसके चलते कई वन्य– वानस्पतिक प्रजातियां संकट में हैं। वायु प्रदूषण के कारण फेफड़ों, त्वचा और सांस संबंधी अनेक बीमारियां पैदा हो रही हैं। इसके अलावा औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाला गंदा पानी नदियों में मिल कर पीने के पानी के स्रोतों को प्रदूषित कर रहा। भू–जल के बेतहाशा दोहन के कारण पेयजल का संकट गहराता जा रहा है।

फैक्ट्रियों, कारखानों से निकलने वाली गैसों और कचरे का भी आसपास रहने वाले लोगों की सेहत पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। इन समस्याओं को केंद्र में रख कर विश्व स्वास्थ्य संगठन अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग और दूसरे अनेक गैरसरकारी संगठनों अध्ययन समय–समय पर आते रहते हैं। अभी हाल में आई विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के मुताबिक, कल–कारखानों के आसपास के वातावरण में बढ़ते प्रदूषण के कारण वहां पैदा होने वाले बच्चों की मृत्युदर सबसे अधिक है। यही नहीं, सड़कों पर वाहनों की बढ़ती संख्या के कारण महानगरों में लोगों में सांस की बीमारियां और चिड़चिड़ापन, तनाव जैसी परेशानियां पैदा हो रही हैं। यातायात

नियंत्रित करने वाले पुलिसकर्मियों पर भी इसका दुष्प्रभाव देखा जा रहा है। भोपाल गैस त्रासदी को औद्योगिक इकाइयों के सबसे बड़े दुष्परिणाम के रूप में देखा जा सकता है। रक्षा उपकरणों में परमाणु और रासायनिक हथियारों की बढ़ती होड़ के कारण समूची मानव जाति के अस्तित्व का खतरा पैदा हो गया है।

इसलिए वैज्ञानिक उपलब्धियों का जहां सकारात्मक असर मानव जीवन में दिखाई दे रहा है, वहीं इसके कई नकारात्मक प्रभाव भी तेजी से उजागर हो रहे हैं। सामाजिक हितों को ध्यान में रख कर लिखे जाने वाले विज्ञान फीचर का लक्ष्य इसके दोनों पहलुओं पर संतुलित रूप से विश्लेषण होना चाहिए। एक उदाहरण देखें–

''इंटरनेट पर पढ़–देख कर वे लोग अपने लिए किसी भी बीमारी का वहम पाल सकते हैं। ऐसे ज्यादातर लोग किसी न किसी चीज के प्रति ऑब्सेस्ड होते हैं। जैसे कि उन्हें सिर–दर्द की शिकायत हुई और उन्होंने इंटरनेट पर तमाम साइट्स छानना शुरू कर दिया। ऐसे में उन्हें जो जानकारियां मिलेंगी उनसे कोई मदद मिलना तो दूर, उलटे उनकी समस्या जटिल हो जाती है। वे मतिभ्रम के शिकार हो सकते हैं। भ्रम की यह स्थिति उनका सुख–चैन छीन सकती है।''

(इंटरनेट प्रिंटआउट सिंड्रोम, राष्ट्रीय सहारा, 2 जून 2005)

9.3.3 वैज्ञानिक दृष्टिकोण से संबंधित

जैसा कि कहा जा चुका है तमाम वैज्ञानिक खोजों और उपकरणों के प्रचलन में आ जाने के बावजूद हमारे समाज का काफी बड़ा तबका अंधविश्वासों और पारंपरिक उपचार पद्धतियों आदि पर विश्वास करता है। कई सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं इसके उन्मूलन के काम में जुटी हैं, फिर भी बच्चों की बलि, स्त्रियों को चुड़ैल घोषित कर मार डालने, उन पर चारित्रिक लांछन लगा कर सती परीक्षा लेने जैसी घटनाएं अक्सर सामने आती हैं। बच्चों के न होने पर अनेक महिलाएं तांत्रिकों के चंगुल में फंस कर शोषण की शिकार होती हैं।

इस तरह के अंधविश्वासों का बुरा नतीजा यह निकलता है कि अनेक लोग रोगों का सही इलाज न करा पाने के कारण असमय मृत्यु के शिकार हो जाते हैं। तपेदिक जैसी बीमारी से भी, जिसका अब पूरी तरह इलाज संभव है, लोग पारंपरिक उपचार और झाड़–फूंक पर भरोसा करने के कारण मौत के मुंह में भी जाते हैं। यही हाल पोलियो का है। देखा गया है कि पोलियो अभियान में लोगों द्वारा सक्रिय भूमिका न निभा पाने के कारण भी अनेक बच्चे विकलांगता के शिकार हैं। सरकार का लक्ष्य था कि 2004 के अंत तक इस समस्या से पूरी तरह निजात पा लिया जाएगा, लेकिन लोगों की लापरवाही, वैज्ञानिक उपलब्धियों पर भरोसा न करने के कारण पोलियो की दवा पिलाने के लिए खासा अनुत्साह देखा गया। इसलिए इस कार्यक्रम को दो बार छह–छह महीने के लिए आगे बढ़ाना पड़ा। विज्ञान फीचर लेखन का एक मकसद लोगों में वैज्ञानिक दृष्टि पैदा करना भी होता है इसलिए सामाजिक विकृतियों को दूर करने के उद्देश्य से वैज्ञानिक तर्कों और सच्चाइयों को उजागर करने की कोशिश होनी चाहिए।

बोध प्रश्न–1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) विज्ञान फीचर का क्या उद्देश्य होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विज्ञान फीचर किन–किन पक्षों को लेकर लिखे जा सकते हैं और उनका मकसद क्या होना चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

3) विज्ञान फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.4 पर्यावरण से संबंधित फीचर : विषय चयन, लेखन और प्रस्तुति

वैज्ञानिक शोधों, अनुसंधानों और उपलब्धियों के चलते जहां दैनिक जीवन में अनेक सुविधाएं प्राप्त हुई हैं वहीं औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले रासायनिक धुएं, कचरे, गंदे पानी और शोर के कारण वायु, ध्वनि और भू–प्रदूषण काफी तेजी से बढ़ा है। औद्योगिक इकाइयों के आसपास के इलाकों में रहने वाले लोगों को फेफड़ों, सांस और त्वचा संबंधी अनेक समस्याएं पैदा हुई हैं। पर्यावरण प्रदूषण के कई कारण हैं, जिनमें एक कारण बढ़ती जनसंख्या भी है। जनसंख्या बढ़ने से लोगों के रहने के लिए घर, भोजन के लिए खाद्य उत्पादन और दूसरी सुविधाओं की आवश्यकता भी लगातार बढ़ी है। इसके चलते लगातार जंगल कट रहे हैं। अनेक वनस्पतियां, पेड़–पौधे और वन्य जीवों का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। हमारा पारिस्थितिकी संतुलन गड़बड़ा रहा है। कंकरीट के मकानों और सड़कों का विस्तार हो रहा है। धरती की सतह का

काफी बड़ा हिस्सा कंकरीट से ढक रहा है जिससे वर्षा जल का अधिकांश हिस्सा जमीन के भीतर जाने की बजाय बह कर व्यर्थ चला जाता है। औद्योगिक इकाइयां और वाहनों की संख्या लगातार बढ़ रही है। इससे पर्यावरण प्रदूषण बढ़ रहा है। वातावरण में अनेक रासायनिक गैसों के घुलने से प्राकृतिक गैसें नष्ट हो रही हैं जिसका प्रभाव हमारे मौसम पर पड़ रहा है। इससे वैश्विक तापमान बढ़ रहा है सूर्य की घातक किरणों को थामने वाली ओजोन की परत क्षरित हो रही है। इसके अलावा कृषि उत्पादन को बढ़ाने के उद्देश्य से खाद को लेकर नए–नए प्रयोग हो रहे हैं। लेकिन इसका परिणाम यह हुआ है कि उत्पादन में तो जरूर कुछ बढ़ोतरी हुई है मगर जमीन की उर्वरा शक्ति पर बुरा प्रभाव पड़ा है।

इन समस्याओं और परेशानियों को देखते हुए पर्यावरण प्रदूषण को रोकने और पारिस्थितिकी संतुलन को कायम करने के लिए पिछले कुछ समय से लगातार प्रयास हो रहे हैं। दुनिया के ज्यादातर देशों ने एकजुट होकर पर्यावरण प्रदूषण को कम करने के लिए एक साझा समझौते पर हस्ताक्षर किये हैं और अगले कुछ सालों में इसमें कमी लाने का संकल्प लिया है। इससे संबंधित कानून बनाए गए हैं और इनका पालन न करने वाली औद्योगिक इकाइयों को दंडित करने का प्रावधान भी है। मगर अब भी अधिकांश लोग पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने और पारिस्थितिकी संतुलन बनाए रखने को लेकर पर्याप्त जागरूक नहीं हो पाए हैं। इसके लिए सरकारी स्तर पर तो जनजागरूकता अभियान चलाए ही जा रहे हैं। कई स्वयंसेवी और नागरिक संगठन इस दिशा में सराहनीय काम कर रहे हैं। पंचायतें और स्थानीय निकाय भी इसमें काफी मददगार साबित हो रही हैं।

पर्यावरण संबंधी फीचर लेखन के मुख्य रूप से तीन क्षेत्रों से विषय चुने जा सकते हैं :

1) पर्यावरण प्रदूषण सम्बन्धी फीचर
2) पारिस्थितिकी संतुलन सम्बन्धी फीचर
3) पर्यावरण जागरूकता संबंधी

9.4.1 पर्यावरण प्रदूषण

इस प्रकार के फीचर लेखन में मुख्य रूप से औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं, गैसों, कचरे, गंदे पानी और घरेलू कचरे से उत्पन्न होने वाली स्वास्थ्य और आसपास के वातावरण संबंधी समस्याओं के बारे में जानकारी प्रदान की जाती है। जैसा कि आप जानते हैं, तेजी से हो रहे औद्योगिक और शहरी विकास में प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन बढ़ा है। पेड़ों–पर्वतो की कटाई में तेजी आई है। नदियों में औद्योगिक कचरा बढ़ता जा रहा है जिससे उनमें गाद भरती जा रही है और उनकी जल संग्रहण क्षमता लगातार कम हुई है। इसका नतीजा यह हुआ है कि बरसात के समय में बाढ़ से अक्सर तबाही देखी जाती है और इसके उलट साल भर पेय जल का संकट बना रहता है। गुजरात, महाराष्ट्र और बिहार में आई बाढ़ इसके ताजा उदाहरण हैं। भू–जल का दोहन लगातार बढ़ने से नलकूपों से पानी निकालना मुश्किल होता जा रहा है। पानी के प्राकृतिक स्रोत सूखते जा रहे हैं।

इतना ही नहीं, औद्योगिक कचरा गिरने से नदियों के पानी में आवश्यक घुलनशीलता नष्ट होती जा रही है जिससे वह न सिर्फ पीने योग्य नहीं रह गया है बल्कि उसमें पलने वाले जीवों का जीवन भी खतरे में है। जब यही पानी समुद्र में जाकर मिलता है तो उसके जीव–जंतुओं पर भी इसका प्रतिकूल असर पड़ता है। वैसे अब यह कानून

बन चुका है कि हर औद्योगिक इकाई को जल शोधक यंत्र लगाना अनिवार्य है। बिना शोधन औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले पानी को नदियों में गिराने की इजाजत नहीं दी जा सकती, लेकिन काफी बड़ी संख्या में औद्योगिक इकाइयां इस नियम का पालन नहीं करतीं। जो कल–कारखाने अवैध रूप से चलाए जा रहे हैं, इसमें उनके सहयोग की तो उम्मीद ही नहीं की जा सकती। यहां तक कि सरकार ने घरेलू मल को भी नदियों में गिरने से रोकने के लिए कई उपाय करने के दावे किए थे। गंगा कार्य योजना पर करोड़ों रुपए अब तक खर्च किए जा चुके हैं, मगर न तो नदियों की गाद कम हुई है और न ही उनकी गंदगी।

प्रदूषण न सिर्फ नदियों तक सीमित है, बल्कि यह वायु और हमारे आसपास के वातावरण में शोर के रूप में भी तेजी से बढ़ रहा है। फैक्टरियों से निकलने वाले धुएं और जहरीली गैसों के वातावरण में मिलने से जहां कार्बन डाइ ऑक्साइड की मात्रा बढ़ रही है और जरूरी ऑक्सीजन की मात्रा कम हो रही है वहीं हमारे सांस लेने के लिए हवा में जरूरी गैसों की मात्रा कम हो रही है। इससे मनुष्य में फेफड़े और चर्म संबंधी रोग बढ़ रहे हैं और पारिस्थितिकी संतुलन भी गड़बड़ा रहा है। वायु प्रदूषण से तपेदिक जैसे रोगों की शिकायतें आम हो गई हैं, फैक्टरियों के आसपास के इलाकों में शिशु और मातृ मृत्यु दर बढ़ी है।

उदारीकरण के इस दौर में उद्योग–धंधों को बढ़ावा देने की कोशिश में वाहनों की संख्या में भी उत्तरोत्तर बढ़ोतरी हुई है। यह निजी और सार्वजनिक दोनों वाहनों के स्तर पर देखी गई है। माल ढुलाई के अलावा परिवहन की बढ़ती परेशानियों के मद्देनजर रोज नए वाहन सड़कों पर उतर रहे हैं। राजधानी दिल्ली के एक आंकड़े के मुताबिक यहां की सड़कों पर हर साल करीब दो लाख नए वाहन उतरते हैं। इससे यातायात की रफ्तार तो धीमी हुई ही है, इनसे निकलने वाले धुएं और शोर से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ रहा है। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर कुछ साल पहले दिल्ली सरकार ने बसों और ट्रकों में डीजल के स्थान पर प्राकृतिक गैस का इस्तेमाल अनिवार्य कर दिया था। इसी तरह निजी चौपहिया और दुपहिया वाहनों में सीसा रहित पेट्रोल का इस्तेमाल जरूरी कर दिया गया था। पंद्रह साल से अधिक पुराने वाहनों को सड़कों से हटा दिया गया था। इससे शहर के प्रदूषण में काफी कमी दर्ज हुई थी, मगर वाहनों की निरंतर बढ़ती तादाद के कारण इस स्तर को बनाए रखना आसान नहीं रह गया है। वाहनों और फैक्टरियों की संख्या बढ़ने से सड़कों और रिहाइशी इलाकों में शोर का वातावरण बना रहता है। इससे लोगों में तनाव और चिड़चिड़ेपन की शिकायतें बढ़ रही हैं। यातायात पुलिसकर्मियों में यह शिकायत अधिक देखी गई है। उनमें से कइयों में हर साल मानसिक विक्षिप्तता की शिकायतें भी दर्ज होती हैं।

औद्योगिक इकाइयों और वाहनों से निकलने वाले धुएं, गैसों और कचरे के अलावा घरेलू कचरा भी पर्यावरण प्रदूषण का एक बहुत बड़ा कारक है। खाद्य सामग्री को देर तक सुरक्षित रखने के मकसद से वस्तुओं को प्लास्टिक की थैलियों में बंद करके बेचने का प्रचलन बढ़ा है। इसके अलावा लोग पहले बाजार से सामान लाने के लिए कपड़े या जूट के थैलों का इस्तेमाल करते थे, मगर अब वह प्रचलन धीरे–धीरे खत्म हो गया है और लोगों में प्लास्टिक के थैलों के इस्तेमाल का फैशन बढ़ा है। बाजार में दुकानदार खुद प्लास्टिक की थैलियों में सामान भर कर दे देते हैं। इससे लोगों के थैले लेकर बाजार जाने की आदत छूट सी गई है। लेकिन अब यह तथ्य हमारे सामने आ चुका है कि प्लास्टिक एक अगलनशील जैविक है, जो जमीन में बरसों पड़े रह

कर भी नहीं गलता। इससे न सिर्फ जमीन की उर्वरा शक्ति नष्ट होती है, बल्कि वायु प्रदूषण भी बढ़ता है। भूजल में इसके रसायन मिल कर उसे भी प्रदूषित करते हैं। इसके अलावा घरों से निकलने वाले कचरे में, सब्जियों के छिलके या बचे हुए खाद्य पदार्थ चूंकि गलनशील जैविक होने के कारण आसानी से गल जाते हैं, मगर प्लास्टिक और कांच से बनी अनेक वस्तुएं जो इस्तेमाल के बाद फेंक दी जाती हैं, जमीन में पड़े रह कर भी नहीं गलतीं।

इसी तरह अस्पतालों से रोज भारी मात्रा में अगलनशील पदार्थ निकलते हैं। दवाइयों की प्लास्टिक की बोतलें–शीशियां, सुइयां और खून की थैलियां आदि इसी कोटि में आती हैं। तमाम सरकारी प्रयासों को बावजूद अस्पतालों से निकलने वाले कचरे का सही तरीके से निपटान नहीं हो पाता। इसका दुष्प्रभाव यह पड़ता है कि इससे न सिर्फ वायु और भू–प्रदूषण बढ़ता है बल्कि अनेक तरह की संक्रामक और असंक्रामक बीमारियां भी पैदा होती हैं। प्लास्टिक की वस्तुओं के इस्तेमाल को रोकने के लिए सरकारी और अनेक गैर सरकारी संस्थाएं लोगों में जागरूकता पैदा करने की कोशिश कर रही हैं। अगलन पदार्थों के सही तरीके से निपटान की विधियां अमल में ला रही हैं, लेकिन इसमें अपेक्षित सफलता मिलती नजर नहीं आती।

जीन अभियांत्रिकी भी पर्यावरण प्रदूषण को बढ़ाने में काफी बड़ी भूमिका निभा रही है। अधिक अन्न उपजाने के आंदोलन के तहत खाद और बीजों पर जो शोध की प्रक्रिया शुरू हुई थी उससे निस्संदेह कृषि उपज को बढ़ावा मिला है, लेकिन जीन से बीज विकसित करने की इधर जो प्रक्रिया शुरू हुई है उसने कृषि योग्य भूमि की उर्वरा शक्ति को लगातार कमजोर किया है। एक जलवायु में पैदा होने वाले अनाज के बीज दूसरी जलवायु जाकर नई तरह की परेशानियां पैदा करते हैं। कम समय में अधिक फसल उगाने की होड़ में बीजों की शक्ति तो नष्ट हुई ही है, इनके स्वाद पर भी प्रतिकूल असर पड़ा है। गोबर और पौधों से तैयार की जाने वाली कंपोस्ट खाद की जगह रासायनिक खादों के प्रचलन से भी भूमि का उपजाऊपन नष्ट हो रहा है। यही नहीं, इन उर्वरकों और कीटनाशक रसायनों के अधिकाधिक इस्तेमाल से अनाज और फल–सब्जियों में रोग पैदा करने वाले तत्त्व पाए जाने लगे हैं। इन्हीं परेशानियों को ध्यान में रखते हुए हालांकि पिछले कुछ समय से जैविक खेती पर बल दिया जाने लगा है, लेकिन खेती में मशीनों के इस्तेमाल का प्रचलन बढ़ने से किसानों के पास पशुधन की खासी कमी हुई है। इसलिए उनसे प्राप्त होने वाला गोबर और खाद बहुत कम मात्रा में उपलब्ध हो पाते हैं। जिस जमीन की उर्वरा शक्ति रासायनिक खादों की वजह से छिन चुकी है उसे वापस लौटाना काफी समय साध्य प्रक्रिया है। किसान फिर से जैविक खेती की तरफ लौट पाएं इसके लिए बड़े पैमाने पर कोशिश करने की जरूरत है।

इस तरह पर्यावरण प्रदूषण हमारे जीवन में हर स्तर पर अपनी जगह बना चुका है। पर्यावरण प्रदूषण संबंधी फीचर लिखते समय इसके सभी पहलुओं का बारीकी से अध्ययन करना जरूरी है। इसके लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विश्लेषण क्षमता की जरूरत है। इसलिए पर्यावरण प्रदूषण पर फीचर लिखते समय लेखक को अलग–अलग क्षेत्रों और उनमें होने वाली परेशानियों की पहचान आवश्यक है। अगर कोई औद्योगिक प्रदूषण के बारे में लिखना चाहता है तो जरूरी नहीं कि उसका अध्ययन कृषि क्षेत्र में फैल रहे प्रदूषण पर फीचर लिखते समय भी काम आए। इसलिए इसमें भी अलग–अलग क्षेत्रों के हिसाब से विशेषज्ञता की जरूरत महसूस की जाने लगी है। अनेक स्वयंसेवी संगठन इन समस्याओं पर काम कर रहे हैं और परेशानियों

का अध्ययन–विश्लेषण कर समाधान निकालने के प्रयास में जुटे हैं। पर्यावरण प्रदूषण संबंधी फीचर लिखते समय इन संस्थाओं के अध्ययन विश्लेषण काफी सहायक सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के *लिए –*

''अयोध्या आने वाले हजारों श्रद्धालु जिस सरयू (घाघरा) को पावन सलिला समझ कर हर रोज डुबकी लगाते हैं, उसका जल पीने को कौन कहे, नहाने के लायकभी नहीं है। .....नदी के तटवर्ती इलाकों में बसे शहरों का हजारों टन जैविक एवं औद्योगिक अवशिष्ट बिना किसी शोधन संयंत्र से गुजारे प्रतिदिन सीधे प्रवाहित कर दिया जाता है जिसका परिणाम यह हुआ है कि जल का पीएच मान बीओडी तथा सीओडी का स्तर, घुलित ऑक्सीजन की मात्रा, जल की कठोरता तथा पारदर्शिता मानक के अनुरूप नहीं रह गई है।...जल में घुलित फॉस्फोरस नाइट्रेट्स की मात्रा भी मानक से कई गुना अधिक है जो नदी में स्नान करने वालों की त्वचा के लिए हानिकारक है। प्रदूषित जल कई तरह के संक्रामक रोगों का भी संवाहक बन गया है।''

(यहां भी खतरे की घंटीः राजेंद्रप्रसाद पांडेय– सहारा समय, 11 जून 2005)

9.4.2 पारिस्थितिकी संतुलन

पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने का भी एक बड़ा कारण बढ़ता पर्यावरण प्रदूषण है। औद्योगिक इकाइयों, वाहनों और रासायनिक कचरे के कारण जहां वनस्पतियों के विकास पर प्रतिकूल असर पड़ता है वहीं इससे कई वनस्पतियों का अस्तित्व समाप्त हो रहा है। बढ़ते प्रदूषण के कारण मौसम का मिजाज गड़बड़ा रहा है। कहीं अधिक वर्षा होती है तो कहीं सूखा पड़ा रहता है। वायुमंडल में रासायनिक जहरीली गैसों की मात्रा बढ़ने से कई प्राकृतिक गैसें नष्ट हो रही हैं। इससे ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा निरंतर घट रही है। ओजोन परत में छेद होने और तेजाबी वर्षा के खतरे बढ़ गए हैं।

आप जानते ही हैं कि प्रकृति का हर प्राणी हर वनस्पति एक दूसरे पर निर्भर हैं। इनमें से एक प्रजाति के भी नष्ट होने से पूरा जीवन और ऋतु चक्र प्रभावित होता है। पिछले कुछ दशकों में तेजी से शहरीकरण के कारण जंगल कट रहे हैं, पहाड़ तोड़े जा रहे हैं इससे वन्यजीवों की कई प्रजातियां नष्ट हो गई हैं, कई दुर्लभ प्रजाति की श्रेणी में आ गई हैं और जो बचे हैं उनका अस्तित्व खतरे में है। कीड़े–मकोड़ों और पशु–पक्षियों का हमारे जीवन में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। खेती में केंचुए और इसके कीड़े जमीन को ऊर्वर बनाए रखने में मदद करते हैं। गिद्ध और कौए जैसे पक्षी मृत पशुओं को खाकर वातावरण को साफ रखते हैं, लेकिन अब इनकी प्रजाति नष्ट हो रही है। पहले गिद्ध और कौए सहज ही दीख जाया करते थे, अब वे कहीं–कहीं दिखते हैं। गिद्ध तो लुप्त होती प्रजाति के अंतर्गत आ गया है। इसी तरह कई प्रकार के पक्षी नष्ट हो रहे हैं। इसकी वजह बिगड़ता पारिस्थितिकी संतुलन है। दूसरे रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों के कारण भी कई कीड़े–मकोड़े नष्ट हो चुके हैं। इसी तरह कई औषधीय वनस्पतियां नष्ट हो गई हैं। कई पेड़–पौधों के लिए अनुकूल वातावरण नहीं रह गया है। कृषि पर इसका प्रभाव पड़ रहा है। पेड़ों और पहाड़ों के कटने से भूस्खलन के खतरे बढ़े हैं।

हालांकि सरकारी और गैरसरकारी संस्थाएं वन्य जीव संरक्षण की दिशा में सराहनीय कार्य कर रही हैं, लेकिन दिनों–दिन बढ़ती जरूरतों के लिहाज से लकड़ी, पत्थर और खनिजों के तस्कर चोरी–छिपे जंगलों–पहाड़ों को नष्ट करने पर तुले हुए हैं। सजावटी वस्तुओं के निर्माण, अंधविश्वासी लोगों और कुछ औषधि निर्माताओं की मांग पर शेर,

चीते, तेंदुए, हिरन जैसे दुर्लभ वन्य जीवों का शिकार कर रहे हैं। यही कारण है कि कई अभ्यारण्यों से शेर और चीते बिल्कुल गायब हो चुके हैं। इसके लिए पर्यटकों को लुभाने के मकसद से वन क्षेत्र में बनाए जा रहे होटल और अतिथि गृह भी काफी हद तक जिम्मेदार हैं। केंद्र सरकार की पहल पर अम्यारण्यों को अधिक सुरक्षित बनाए जाने की दिशा में काफी कारगर कदम उठाए जा रहे हैं। पारिस्थितिकी संबंधी फीचर लिखने के लिए इन तमाम बातों की जानकारी जरूरी है।

9.4.3 पर्यावरण जागरुकता संबंधी फीचर

पर्यावरण संबंधी जागरूकता पैदा करने की दिशा में कई सरकारी और गैरसरकारी संगठन काफी समय से प्रयासरत हैं, विद्यालयों में पर्यावरण शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है लेकिन इसका अपेक्षित परिणाम नजर नहीं आ रहा। जैसा कि हमने ऊपर कहा है, दुनिया के अधिकांश देश पर्यावरण प्रदूषण को कम करने और पारिस्थितिकी संतुलन कायम करने के मकसद से एकजुट होकर प्रयास कर रहे हैं। औद्योगिक विकास के साथ–साथ उन तकनीकी पक्षों पर भी ध्यान दिया जा रहा है जिससे पर्यावरण पर पड़ने वाले प्रतिकूल प्रभाव को रोका जा सके। लेकिन पर्यावरण के प्रति जब तक जमीनी स्तर पर जागरूकता पैदा नहीं होती, साधारण जनता में इसके प्रति सजगता का भाव पैदा नहीं होता, इस समस्या से निपटना आसान नहीं होगा। पर्यावरण संबंधी फीचर लिखने वालों की यह बड़ी जिम्मेदारी बनती है कि वे समस्याओं को उठाते हुए उनके प्रति लोगों में सजगता पैदा करें। कई बार सिर्फ समस्याओं को सामने रख देने भर से लोगों में उसके प्रति जागरूकता नहीं आ पाती इसलिए उसके उपायों पर भी प्रकाश डालना जरूरी हो जाता है। पर्यावरण और पारिस्थितिकी के संबंध में फीचर लिखने वालों की यह जिम्मेदारी बनती है कि वे इस दिशा में दुनिया भर में चल रहे प्रयासों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध कराएं।

बोध प्रश्न–2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) पर्यावरण प्रदूषण बढ़ने के क्या दुष्प्रभाव सामने आए हैं?

.....

.....

.....

.....

.....

2) पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने के कारण हमारे जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने में फीचर के जरिए क्या मदद की जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.5 स्वास्थ्य संबंधी फीचर : विषय का चयन, लेखन और प्रस्तुति

पिछले पचास साल का इतिहास देखें तो विज्ञान ने अगर किसी क्षेत्र में सबसे अधिक सकारात्मक उपलब्धियां हासिल की हैं तो वह है चिकित्सा विज्ञान। अनेक बीमारियों के कारणों के बारे में जानकारी न होने, उनके उपचार की पद्धतियों और दवाओं की खोज न होने के कारण अक्सर महामारी से हजारों लोग मौत के मुंह में समा जाते थे। चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोधों के कारण अनेक रोगों पर विजय प्राप्त की जा चुकी है। गंदगी के कारण हमारे देश में चेचक, कालाजार, तपेदिक आदि संक्रामक रोगों के कारण लोग मरते थे। अब इनके टीके उपलब्ध हो जाने के कारण बच्चे के पैदा होने के साथ ही पोलियो, टिटनेस, डिप्थीरिया, चेचक या पानी के कारण होने वाली हेपेटाइटिस यानि पीलिया आदि के टीके लगा कर जीवन भर के लिए इन रोगों से मुक्ति पा ली जाती है। चेचक अब लगभग समाप्त है। तपेदिक का आसानी से इलाज संभव है।

चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में निरंतर शोधों से जहां रोगों के इलाज में सुविधा हुई है वहीं लोगों की अज्ञानता के कारण जो बीमारियां फैलती थीं उन पर भी काफी हद तक रोक लगी है। पहले बच्चा पैदा होने पर अस्पताल की दाई की मदद लेने की बजाय लोग गांव की अप्रशिक्षित दाई से नाल कटवा लिया करते थे जिससे जच्चा–बच्चा दोनों को टिटनेस का खतरा होता था। इसी तरह अनेक प्रकार के अंधविश्वासों के कारण लोग इलाज करवाने की बजाय झाड़–फूंक, गंडा–तावीज, तंत्र–मंत्र आदि पर अधिक भरोसा करते थे। चिकित्सा विज्ञान के शोधों और स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रमों के कारण लोगों में स्वच्छता, पोषण, नियमित जांच आदि के प्रति काफी सजगता आई है। कस्बों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के खुल जाने से ग्रामीण लोग झाड़–फूंक, टोने–टोटके और पारंपरिक उपचार पद्धतियों की बजाय चिकित्सा व्यवस्था पर भरोसा करने लगे हैं।

मगर अब भी इस दिशा में पूरी तरह सफलता नहीं मिल पाई है। बढ़ती आबादी के अनुरूप सभी के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाएं मुहैया कराना एक कड़ी चुनौती है। वर्ष 2005 में केंद्र सरकार के राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन की शुरुआत से सभी गावों में स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचने और खासकर महिलाओं और बच्चों की देखभाल में खासी उम्मीद जगी है। दूरदराज के इलाकों में प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों के न होने से जहां लोगों में स्वास्थ्य के प्रति अपेक्षित जागरूकता नहीं आ पा रही थी वहीं उनमें पारंपरिक उपचार पद्धतियों पर भरोसा और अंधविश्वासों को दूर कर पाना मुश्किल हो रहा था। ग्रामीण महिलाओं में व्यक्तिगत स्वच्छता, पोषाहार के प्रति लापरवाही और

बच्चों को पालने में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अभाव कई बीमारियों का कारण बन रहा था। इससे असमय मृत्यु की दर में भी काफी बढ़ोतरी देखी गई। लेकिन स्वास्थ्य केंद्रों में भी जरूरी दवाइयों और जांच–उपचार आदि में काम आने वाले जरूरी उपकरणों का अभाव लोगों में सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति अविश्वास का कारण बन रहे हैं। इन कमियों को दूर करने के लिए केंद्र और राज्य सरकारें हर संभव कोशिश कर रही हैं।

हालांकि औद्योगिक इकाइयों, वाहनों, कृषि में हो रहे रासायनिक खाद–कीटनाशकों और बीजों के प्रयोग से कई नई बीमारियों का जन्म हुआ है, लेकिन चिकित्सा विज्ञानियों ने इन रोगों के उपचार के लिए जिस तरह तत्परता दिखाई है उससे काफी उम्मीदें जगी हैं। पिछले दिनों कुछ महानगरों में गंदे इलाकों में उगने वाली सब्जियों और फलों में पाए जाने वाले कीटाणुओं से दिमागी बुखार के प्रकोप की खबरें खूब छाई रहीं, लेकिन चिकित्सकों ने बहुत कम समय में उसका निदान तलाश लिया। केंद्र सरकार ने वर्ष 2005 में संक्रामक और असंक्रामक रोगों के कारणों पर नजर रखने, उनके इलाज और टीकों पर शोध के लिए अलग से आयोग गठित करने को मंजूरी दी। इससे आने वाले दिनों में कई रोगों के पैदा होने से पहले उनके रोकथाम के उपाय करने में सुविधा होगी।

हालांकि अब भी कैंसर और एड्स जैसे जानलेवा रोगों का अचूक इलाज तलाश पाना चिकित्सा विज्ञानियों के लिए चुनौती बना हुआ है, मगर दुनिया भर में जिस तरह इसके लिए प्रयास चल रहे हैं और इनसे बचने के उपायों पर जनजागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं उससे चिकित्सा विज्ञान में भरोसा बढ़ा है। हृदय रोग के मामले में पहले जहां बाइपास सर्जरी एकमात्र इलाज था, पर अब उसकी जगह हृदय प्रत्यारोपण और वृंत कोशिका (स्टेम सेल) के जरिए मृत कोशिकाओं को पुनर्जीवित की पद्धति तलाश कर ली गई है। वृंत कोशिका के प्रत्यारोपण से कई रोगों पर भी फिर से विजय प्राप्त की जा सकती है। यह प्रक्रिया भारत में भी कई लोगों पर आजमाई जा चुकी है।

बदलते खानपान और तनावभरी जिंदगी के कारण भी स्वास्थ्य संबंधी कई तरह की अनियमितताएं (डिसॉर्डर्स) सहज ही पैदा हो रहे हैं। नए रोग पैदा हो रहे हैं। इनमें से कुछ तो पारिस्थितिकी असंतुलन के कारण और कई मनुष्य की लापरवाही के कारण हो रहे हैं। मनुष्य की लापरवाही से पैदा होने वाले रोगों से बचने का सबसे आसान तरीका सजगता है। इसके लिए सरकारी और गैर–सरकारी संस्थाएं लगातार जागरूकता अभियान चला रही हैं। अगर उनके उपायों पर ध्यान दें तो कई रोगों और स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं से बचा जा सकता है।

इस प्रकार स्वास्थ्य संबंधी फीचर लिखने वाले की जिम्मेदारी बनती है कि वह रोगों के बारे में तो जानकारी रखे ही, उन उपायों, शोधों और उपचार पद्धतियों की भी जानकारी रखे जो लगातार हमारे सामने आ रही हैं। स्वास्थ्य संबंधी फीचर के लिए विषय का चुनाव करते समय इसके क्षेत्रों का निर्धारण पहले कर लेना जरूरी होता है। इसमें रोगों की पहचान, उनके उपचार और रोकथाम के नए तरीकों और शोधों के बारे में जानकारी देना तो जरूरी है ही, लोगों में रोगों के बारे में आगाह करने, उनसे बचने के उपायों और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता पैदा करने की भी जरूरत है। हमारे देश में आज भी हर साल हजारों माताएं और बच्चे खानपान का ध्यान न रखने, गर्भावस्था के दौरान नियमित जांच न कराने और जरूरी एहतियात न बरतने के कारण असमय मृत्यु

को प्राप्त हो जाते हैं। सामान्य बीमारियों में भी टोने–टोटके और झाड़–फूंक पर अधिक विश्वास करने की वजह से लोग असाध्य रोगों के शिकार हो जाते हैं। इन सबके बारे में लोगों को जागरूक करना स्वास्थ्य संबंधी फीचर लिखने वाले की बड़ी जिम्मेदारी है। एक उदाहरण देखें –

''भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद के 2001 में करवाए गए एक सर्वेक्षण के अनुसार देश भर में तेरह साल की उम्र के बच्चों में से 12.8 प्रतिशत व्यवहार संबंधी किसी न किसी समस्या से ग्रस्त थे। मनोचिकित्सकों का कहना है कि आज स्कूल जाने वाले हर सौ बच्चों में से चौदह ऐसे हैं जिन्हें मनोचिकित्सक के पास जाने की जरूरत है। बढ़ते अकादमिक दबाव, मशीनीकरण, पुराने मूल्यों से मोहभंग और मानसिक दबाव बढ़ने का परिणाम यह हुआ है कि आज बच्चों की पूरी पीढ़ी भ्रम तथा जटिलताओं के पेच में उलझी दिखती है। इन समस्याओं के मूल में बच्चों के लालन–पालन का तरीका है। बहुत ज्यादा उपेक्षा या बहुत ज्यादा सुविधाएं उपलब्ध करवाना बच्चों के लिए खतरनाक है।''

(अवसाद में मासूम नेहा शर्मा– सहारा समय, 13 अगस्त 2005)

बोध प्रश्न 3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) स्वास्थ्य संबंधी अनियमितताओं के मुख्य रूप से क्या कारण रहे हैं? इनसे किस प्रकार निपटा जा सकता है?

.....

.....

.....

.....

.....

2) स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय किन बातों को ध्यान में रखना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.6 भाषा–शैली

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा संबंधी फीचर लेखन चूंकि तकनीकी विषयों पर आधारित है इसलिए इसमें साहित्यिक लेखन की तरह कल्पना, मुहावरेदारी और लालित्य की गुंजाइश कम रहती है। तकनीकी शब्दावली का प्रयोग अधिक होता है। इसमें कल्पना के स्थान पर तथ्य महत्त्वपूर्ण होते हैं इसलिए जिस भी विषय को लिखने

के लिए चुनें, उसका विस्तार और गंभीरता से अध्ययन करें। उस पर भरपूर सामग्री जुटाएं। इन क्षेत्रों में दुनिया भर में रोज नए प्रयोग हो रहे हैं, खोजें हो रही हैं। इन सबके बारे में अब पत्र–पत्रिकाएं खासी सजग दिखाई देती हैं। उनसे आंकड़े तो उपलब्ध होंगे ही, इंटरनेट पर भी काफी सामग्री उपलब्ध होती है। जिन क्षेत्रों के बारे में आप जानकारी उपलब्ध कराना चाहते हैं उनसे संबंधित वेबसाइटों की जानकारी रखें और अगर नहीं भी है तो किसी वेबसाइट के सर्च इंजन में जाकर अपने विषय के बारे में जानकारी मांगें। वहां से संबंधित विभिन्न वेबसाइटों के पते उपलब्ध हो जाएंगे। उन पर जाकर जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

इसके अलावा सरकारी, गैरसरकारी संस्थाओं द्वारा किए गए अध्ययनों के निष्कर्ष और आंकड़ों को भी जुटाया जाना चाहिए। जहां जरूरत हो वहां संबंधित क्षेत्र के विशेषज्ञों से संपर्क करके उनका साक्षात्कार लिया जा सकता है और संबंधित विषय पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की जा सकती है। संभव हो तो संबंधित विषय के स्रोत तक पहुंचने की भी कोशिश की जानी चाहिए। जैसे, अगर आप फैक्टरियों से निकलने वाले गंदे पानी के दुष्प्रभाव के बारे में फीचर लिख रहे हैं तो किसी औद्योगिक इलाके का दौरा कर सकते हैं और वहां की जल निकासी व्यवस्था खुद देख कर औद्योगिक इलाकों में रहने और काम करने वाले लोगों से बातचीत कर सकते हैं। पीड़ित व्यक्तियों के अनुभव भी ले सकते हैं। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों की राय ले सकते हैं और अगर कोई संस्था काम कर रही है तो उससे संबंधित आंकड़े उपलब्ध कर सकते हैं। यह सब तभी संभव है जब आपकी उस क्षेत्र विशेष में गहरी रुचि हो।

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा से संबंधित विषयों पर फीचर लिखते समय भाषा में तकनीकी शब्दों के इस्तेमाल से परहेज नहीं किया जा सकता लेकिन उन शब्दों की विस्तार से व्याख्या की भी जरूरत होती है ताकि सामान्य पाठक उसके बारे में आसानी से समझ सके। चूंकि वैज्ञानिक शब्दावली अधिकांश अंग्रेजी में होती है और ज्यादातर के लिए ठीक–ठीक हिंदी शब्द न तो गढ़े जा सकते हैं और न ही वे सामान्य लोगों की बातचीत में या प्रचलन में आ पाए हैं इसलिए उनकी व्याख्या जरूरी होती है। जैसे, मनोविज्ञान की एक शब्दावली है 'अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिविटी डिसॉर्डर एडीएचएडी'। इसे हिंदी में कहा जा सकता है कि किसी काम में ध्यान न केंद्रित कर पाने की समस्या। इससे सामान्य पाठक भी इस समस्या के बारे में आसानी से समझ सकता है। एड्स जैसे रोगों के बारे में लगातार प्रचार होते रहने के कारण अब लोग इसके पूरे नाम को जानने की बजाय संक्षिप्त नाम से ही जानने लगे हैं। इसलिए ऐसी शब्दावली का जस का तस प्रयोग किया जा सकता है, लेकिन जिन नामों के बारे में लोग अभी जान नहीं पाए हैं उनकी व्याख्या जरूरी होती है।

विज्ञान, पर्यावरण और चिकित्सा संबंधी विषयों की प्रस्तुति में भाषा को बहुत मुहावरेदार या कलात्मक बनाने की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन इस बात का ध्यान रखना होता है कि आप जो बातें कहना चाहते हैं उसे बोलचाल की भाषा में सहजता से प्रस्तुत कर सकें चूंकि फीचर का कोई एक निर्धारित ढांचा नहीं होता इसलिए बातों को सरस–सरल तरीके से प्रस्तुत करने के लिए उसमें कविताओं, लोकोक्तियों, किसी पौराणिक कथा, साक्षात्कार, अनुभव आदि का सहारा लिया जा सकता है। यह भी ध्यान रखने की जरूरत होती है कि आंकड़ों और शोधों का इतना भंडार न जमा कर लिया जाए कि लेख नीरस और उबाऊ हो जाए। इसलिए जरूरत भर के आंकड़े और शोधों का ही हवाला दिया जाना चाहिए। मुख्य रूप से ध्यान इस बात पर होना चाहिए कि आप जो कहना चाहते हैं वह ठीक ढंग से प्रस्तुत हो सके। बाजारों में

वाहनों की बढ़ती भीड़ और उन्हें पार्क करने के लिए जगह की कमी पर लिखे गये एक फीचर का अंश देखें –

''महानगरों में धड़ाधड़ शॉपिंग मॉल बन रहे हैं, लेकिन इन्हें बनाने वाले व्यवसायी शायद ही सोचते हों कि शॉपिंग करने वाले गाड़ियों से आएंगे। उनके लिए पार्किंग की समुचित व्यवस्था भी होनी चाहिए। पर उनका कोई कुसूर नहीं दिखता। दरअसल शहरों में जमीन का इस हद तक अतिक्रमण हो चुका है कि मॉल के लिए बमुश्किल जमीन मिल पाती है। ऐसे में पार्किंग के लिए सोचे भी तो कैसे?''

(फिर भी आंखों में सपनाः कावस कपाड़िया– सहारा समय, 13 अगस्त 2005)

आपने देखा कि लेखक ने कितनी सहजता से इसमें अपनी बात को रख दिया है।

बोध प्रश्न 4

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें।

1) विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की भाषा कैसी होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

.....

2) विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की प्रस्तुति में किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक है?

.....

.....

.....

.....

.....

9.7 सारांश

- समाज का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र है जहां विज्ञान ने अपनी पहुंच नहीं बनाई है। इस तरह हर समाचार पत्र और पत्रिका के लिए वैज्ञानिक उपलब्धियों, खोजों और शोधों को नजरअंदाज करना असंभव हो गया है।
- विज्ञान अब महज एक विषय नहीं है, बल्कि इसकी अनेक शाखाएं हो गई हैं। कंप्यूटर, वाहन, घरेलू उपकरण, कृषि उपकरण, औद्योगिक विकास आदि से संबंधित अलग–अलग शोध हो रहे हैं और ये विज्ञान के स्वतंत्र क्षेत्रों के रूप में विकसित हो चुके हैं।

- हालांकि तमाम वैज्ञानिक उपलब्धियों के बावजूद समाज का एक काफी बड़ा तबका आज भी झाड़–फूंक, गंडे–तावीज, टोने–टोटके और पारंपरिक उपचार पद्धतियों में विश्वास करता है। उसमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के लिए व्यापक प्रयासों की जरूरत है।

- विज्ञान संबंधी फीचर लिखते समय क्षेत्र विशेष का चुनाव जरूरी है यह कार्य न सिर्फ नए उपकरणों के बारे में जानकारी उपलब्ध कराने से पूरा हो जाता है, बल्कि इसके दुष्प्रभावों का भी समुचित विश्लेषण जरूरी होता है। साथ ही लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने के उद्देश्य से विषयों का चुनाव कर फीचर लिखे जाने चाहिए।

- वैज्ञानिक उपलब्धियों से जहां आम आदमी के जीवन में काफी सहूलियतें आई हैं, जीवन स्तर में सुधार हुआ है वहीं पर्यावरण पर इसका बुरा असर भी हुआ है। औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले धुएं, जहरीली गैसों और रासायनिक कचरे के कारण पर्यावरण काफी तेजी से प्रदूषित हुआ है। नदियों का पानी पीने योग्य नहीं रह गया है। इनमें पलने वाले जीवों का अस्तित्व संकट में पड़ गया है।

- वनस्पतियों और कृषि उपज पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। पारिस्थितीकी संतुलन गड़बडा जाने की वजह से ऋतु चक्र प्रभावित हुआ है और सैकड़ों वनस्पतियों और वन्य जीवों का जीवन संकट में पड़ गया है।

- पर्यावरण से संबंधित फीचर लिखने के लिए विषय का चुनाव करते समय पर्यावरण प्रदूषण के प्रभावों के अलावा पारिस्थितिकी संतुलन से संबंधित समस्याओं को उठाया जा सकता है। इसके अलावा लोगों में पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से भी विषयों का चुनाव किया जा सकता है।

- वैज्ञानिक उपलब्धियों में सबसे महत्त्वपूर्ण चिकित्सा के क्षेत्र में कामयाबी देखी गई है। पहले रोगों के कारणों की पहचान न हो पाने के कारण लोग महामारी का शिकार हो जाते थे पर अब ऐसे कई रोगों पर काफी हद तक काबू पा लिया गया है। हालांकि वातावरण में आ रहे बदलाव और खानपान, रहन–सहन संबंधी अनियमितताओं के कारण नए रोग भी तेजी से उभर रहे हैं लेकिन चिकित्सा विज्ञानियों की सजगता के कारण उन पर काबू पाना मुश्किल नहीं रह गया है।

- कई रोगों को जड़ से खत्म कर दिया गया है और कइयों को समाप्त करने के प्रयास चल रहे हैं।

- स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के लिए विषय का चुनाव करते समय चिकित्सा के क्षेत्र में हो रहे शोधों की जानकारी उपलब्ध कराने के साथ–साथ लोगों को जागरूक बनाने से संबंधित विषयों का चुनाव भी जरूरी है।

- विज्ञान, पर्यावरण और स्वास्थ्य संबंधी फीचर की प्रस्तुति में वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के प्रयोग से परहेज नहीं किया जा सकता लेकिन जहां जरूरत हो, उसकी व्याख्या भी जरूरी होती है ताकि आम पाठक आसानी से समझ सकें। प्रस्तुति के लिए संबंधित क्षेत्र का गहन अध्ययन और उससे संबंधित जानकारियां उपलब्ध कराना जरूरी होता है। मगर इसके लिए बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल होना चाहिए। आंकड़ों और शोधों का ऐसा भंडार नहीं जमा करना चाहिए कि फीचर नीरस और उबाऊ हो जाए।

अभ्यास

1) विज्ञान से संबंधित फीचर लिखते समय विषय के चुनाव में किस तरह की सावधानियां बरतनी जरूरी होती हैं?

.....

.....

.....

.....

2) पर्यावरण प्रदूषण पर फीचर लिखने से पहले किस तरह की तैयारी जरूरी है?

.....

.....

.....

.....

.....

3) पारिस्थितिकी संतुलन बिगड़ने के कुछ मुख्य कारणों पर विस्तार से प्रकाश डालें?

.....

.....

.....

.....

4) स्वास्थ्य संबंधी फीचर लेखन के जरिए जनजागरूकता पैदा करने में किस तरह मदद की जा सकती है?

.....

.....

.....

.....

5) फीचर लेखन की भाषा और शैली कैसी होनी चाहिए?

.....

.....

.....

.....

9.8 बोध प्रश्नों /अभ्यासों के उत्तर

इकाइयों के गहन अध्ययन के पश्चात स्वयं उत्तर लिखने का प्रयास करें।